भोपाल गैस त्रासदी के चार दशक

भोपाल में 2-3 दिसंबर, 1984 की दरम्यानी रात यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री में जहरीली गैस मिथाइल आइसोसाइनेट (मिक) का रिसाव शुरू हुआ जिसने विश्व की भीषणतम औद्योगिक दुर्घटनाओं में से एक सबसे बड़े हादसे का स्वरूप ले लिया. गैस रिसाव के कारण भीषण तबाही मची और देर रात के बाद हजारों लोग सड़कों पर बदहवास भागते-दौड़ते नजर आए और सैकड़ों लोग सड़कों पर ही गिर गए. गैस के बादल को हवा के झोंके अपने साथ बहाकर ले जा रहे थे और सड़कों पर लोग धड़ाधड़ ताश के पत्तों की तरह गिरते जा रहे थे. कुछ लोग तो उस सुबह उठे ही नहीं. वे सभी मौत के आगोश में समा गए. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इस दुर्घटना के कुछ ही घंटों के भीतर 5,295 लोग मारे गए थे.

देश में जब भी बड़ी घटनाओं का जिक्र होता है, तो भोपाल गैस त्रासदी सबके जहन में आ जाती है. सैकड़ों-हजारों लोग इससे मर गए. लोगों का दम घुटने लगा. सांस रुकने लगी. लोगों ने जब खुली हवा में निकलने की कोशिश की तो बिखरी गैस ने उनके ड्डिलए और काल का काम किया. अगले दिन शहर में सड़कों पर जगह जगह लाशें पड़ी हुई थीं.

फैक्ट्री के पास ही झुग्गी-बस्ती बनी थी, जहां काम की तलाश में दूर-दराज गांव से आकर लोग रह रहे थे. इन झुग्गी-बस्तियों में रह रहे कुछ लोगों को तो नींद में ही मौत आ गई. जब गैस धीरे-धीरे लोगों को घरों में घुसने लगी, तो लोग घबराकर बाहर आए, लेकिन यहां तो हालात और भी ज्यादा खराब थे. किसी ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया, तो कोई हांफते-हांफते ही मर गया.

खराब टैंक में पानी घुसा और फिर... नियमों के मुताबिक, हर टैंक में 30 टन से ज्यादा लिक्विड एमआईसी नहीं भरा जा सकता था, लेकिन इस टैंक में 42 टन था. इसी विफलता के कारण यूनियन कार्बाइड भोपाल में मिथाइल आइसोसाइनेट का उत्पादन बंद करने पर मजबूर हो गई. रखरखाव के लिए संयंत्र को आंशिक रूप से बंद कर दिया गया. एक दिसंबर को खराब टैंक को फिर से चालू करने का प्रयास किया गया, लेकिन प्रयास विफल रहा. तब तक, संयंत्र की अधिकांश मिथाइल आइसोसाइनेट संबंधी सुरक्षा प्रणालियां खराब हो चुकी थीं. रिपोर्ट्स के मुताबिक, 2 दिसंबर की शाम तक पानी खराब टैंक में घुस गया था, जिसके कारण केमिकल रिएक्शन हुआ.

क्या है मिथाइल आइसोसाइनेट ?

मिथाइल आइसोसायनेट एक रंगहीन तरल है. इसका इस्तेमाल कीटनाशक बनाने में होता है. सुरक्षित स्टोरेज का बंदोबस्त किया जाए तो स्ढ्ढष्ट सुरक्षित है, लेकिन रसायन गर्मी मिलने पर ये काफी तेजी से फैसला है. पानी के संपर्क में आने पर, एमआईसी में रिएक्ट करता है. गर्मी का रिएक्शन होने पर हालात जानलेवा हो जाते हैं. गंभीरता को देखते हुए अब मिथाइल आइसोसाइनेट का उत्पादन नहीं होता, हालांकि यह अभी भी कीटनाशकों में प्रयोग किया जाता है.

सेहत पर असर

इस जानलेवा गैस के संपर्क में आते ही सबसे पहले अल्सर, फोटोफोबिया, श्वसन संबंधी समस्याएं सामने आएंगी. इसके बाद एनोरेक्सिया, लगातार पेट दर्द, आनुवांशिक समस्या, न्यूरोसिस, आवाज और विजुअल मेमोरी से जुड़ी परेशानी बिगड़ी हुई तर्क क्षमता जैसी प्रमुख परेशानियां शामिल हैं. लंबे समय तक परेशान करने वाली स्वास्थ्य समस्याओं में क्रोनिक कंजंक्टिवाइटिस , फेफड़ों की क्षमता में कमी, गर्भावस्था में कमी, शिशु मृत्यु दर में वृद्धि, क्रोमोसोमल असामान्यताओं में वृद्धि समेत और भी बहुत कुछ शामिल हैं.

फिल्मों में दिखा गैस त्रासदी की काली रात का मंजर

1984, 2-3 दिसंबर की दरम्यानी रात ही वह स्याह रात थी, जो भोपाल में हजारों निर्दोष लोगों की जिंदगी लील गई. चार दशक बीत जाने के बावजूद, इसके जख्म आज भी ताज़े हैं. उस रात मिथाइल आइसो साइनेट गैस के रिसाव ने हजारों मासूमों की जान ले ली और लाखों लोगों के जीवन को स्थायी रूप से प्रभावित किया. इस त्रासदी का असर कई पीढ़ियों तक बना रहा. यही कारण है कि यह भयावह घटना समय-समय पर सिनेमा, वेब सीरीज और डॉक्युमेंट्रीज़ का एक महत्वपूर्ण विषय बनती रही है.

द रेलवे मेन

यशराज फिल्म्स के बैनर तले बनी यह हालिया वेब सीरीज (नेटफ्लिक्स पर रिलीज़) खासी चर्चित रही है. निर्देशक शिव रवैल ने इस सीरीज में भोपाल गैस त्रासदी को एक अलग दृष्टिकोण से कवर किया है. सीरीज ने उस खौफनाक रात में रेलवे कर्मचारियों के निस्वार्थ योगदान और उनकी बहादुरी को बखूबी दर्शाया है. इसमें केके मेनन, आर माधवन, बाबिल खान, दिव्येंदु, सनी हिंदुजा और जूही चावला ने मुख्य भूमिकाएं नभाई हैं.

भोपाल : अ प्रेयर फॉर रेन

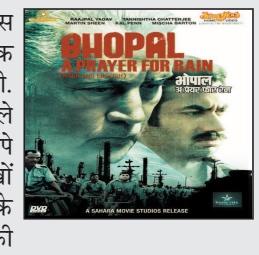

निर्देशक रवि कुमार ने साल 2014 में इस फिल्म के माध्यम से त्रासदी की भयानक रात की कहानी दर्शकों के सामने रखी. यह फिल्म उस फैक्ट्री में काम करने वाले मजदूरों की दयनीय स्थिति, कुछ छिपे हुए रहस्यों और भोपाल की लाखों जिंदगियों की कहानी है, जो हवा के जहर को खत्म करने के लिए बारिश की आस में बैठी थीं. फिल्म में राजपाल यादव, मार्टिन शीन, मिचा बार्टन और तनिष्ठा चटर्जी जैसे कलाकार मुख्य भूमिकाओं में थे.

भोपाल एक्सप्रेस

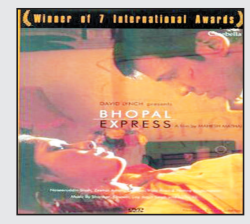

1999 में महेश मथाई द्वारा निर्देशित यह फिल्म एक नवविवाहित जोड़े की कहानी है, जिसकी ज़िंदगी गैस त्रासदी के बाद पूरी तरह से बदल जाती है. इस फिल्म में केके मेनन (जिन्होंने 'द रेलवे मेन' में भी काम किया है), नसीरुद्दीन शाह, जीनत अमान और नेत्रा रघुरमन ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं. यह फिल्म यूट्यूब पर उपलब्ध है.

मार्मिक डॉक्युमेंट्रीज़

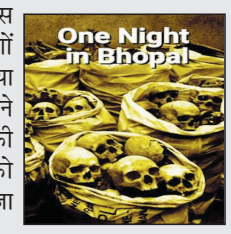

वन नाइट इन भोपाल : 2004 में आई इस डॉक्युमेंट्री में हादसे में जीवित बचे लोगों की ज़ुबानी उस रात की कहानी को दिखाया गया है. यह डॉक्युमेंट्री फैक्ट्री के शुरू होने से पहले के उत्साह और त्रासदी के बाद की पीढ़ी-दर-पीढ़ी पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाती है. यह भी यूट्यूब पर देखी जा सकती है.

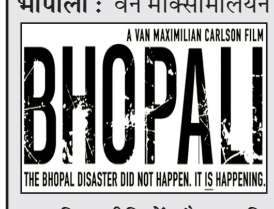

भोपाली : वैन मैक्सिमिलियन कार्लसन द्वारा निर्देशित यह डॉक्युमेंट्री त्रासदी के पीड़ितों को इंसाफ के लिए लड़ते हुए दिखाती है. इसमें उस रात की खौफनाक कहानी के साथ-साथ हादसे के बाद बरती गई लापरवाही और दीर्घकालिक प्रभावों को खुलकर सामने रखा गया है. इसमें वास्तविक पीड़ितों और प्रभावित व्यक्तियों के इंटरव्यू भी शामिल हैं.

अन्य फिल्मों और सीरीज में रेफरेंस

द फैमिली मैन (सीजन 1): अमेज़न प्राइम कीलोकप्रिय वेब सीरीज के क्लाइमेक्स में भोपाल गैस त्रासदी के कुछ रेफरेंस दिखाए गए हैं.

जवान : शाह रुख खान अभिनीत इस हिट फिल्म में भी समाज में घटित कई घटनाओं का जिक्र है, जिसमें भोपाल गैस त्रासदी का एक रेफरेंस भी शामिल है. फिल्म में प्रिया मणि के किरदार के माध्यम से जहरीले पदार्थ छोड़ने वाली एक फैक्ट्री को बंद करवाया जाता है.

जहरीली गैस से कोख में ही मारे गए बच्चे

भोपाल गैस त्रासदी से कुल 5,21,000 लोग प्रभावित हुए थे. जुलाई, 2023 में भोपाल गैस त्रासदी पर एक अध्ययन सामने आया, जिसे करीब 30 साल के रिसर्च के बाद छापा गया. यह अध्ययन 1985 से लेकर 2015 तक के त्रासदी से बचे 92,320 लोगों पर किया गया था. इसमें यह बताया गया कि इस त्रासदी ने कोख में पल रहे बच्चों को भी नहीं छोड़ा. जो लोग बच गए, उनमें से कई को कैंसर हो गया. बहुत को सांस लेने में दिक्कतें और आंखों की रोशनी चले जाने से विकार पैदा हो गए.

40 टन जहरीली गैस का हुआ था रिसाव

दरअसल, कीटनाशक बनाने वाल अमेरिकी कंपनी डाउ की यूनियन कार्बाइड की फैक्टरी से करीब 40 टन गैस का रिसाव हुआ था. इस जहरीली गैस के रिसाव का असर इतना ज्यादा रहा कि बरसों बाद मरने वालों का आंकड़ा करीब 25 हजार तक जा पहुंचा. कहा जाता है कि लोगों को मौत की नींद सुलाने में इस जहरीली गैस को औसतन तीन मिनट लगे. इसकी वजह यह थी कि यूनियन कार्बाइड के टैंक नंबर 610 में जहरीली मिथाइल आइसोसाइनेट गैस का पानी से मिल जाना. इससे हुई रासायनिक प्रक्रिया की वजह से टैंक में दबाव पैदा हो गया और टैंक खुल गया और उससे निकली गैस ने हजारों लोगों को मार डाला.

दरअसल, कीटनाशक बनाने वाल अमेरिकी कंपनी डाउ की यूनियन कार्बाइड की फैक्टरी से करीब 40 टन गैस का रिसाव हुआ था. इस जहरीली गैस के रिसाव का असर इतना ज्यादा रहा कि बरसों बाद मरने वालों का आंकड़ा करीब 25 हजार तक जा पहुंचा. कहा जाता है कि लोगों को मौत की नींद सुलाने में इस जहरीली गैस को औसतन तीन मिनट लगे. इसकी वजह यह थी कि यूनियन कार्बाइड के टैंक नंबर 610 में जहरीली मिथाइल आइसोसाइनेट गैस का पानी से मिल जाना. इससे हुई रासायनिक प्रक्रिया की वजह से टैंक में दबाव पैदा हो गया और टैंक खुल गया और उससे निकली गैस ने हजारों लोगों को मार डाला.

भोपाल में 1969 में हुई थी यूनियन कार्बाइड की स्थापना

भोपाल में यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड की स्थापना सन 1969 में की गई थी. हादसे के समय यहां लगभग 9 हजार लोग काम करते थे. इस कंपनी की 50.9 प्रतिशत हिस्सेदारी यूनियन कार्बाइड और कार्बन कार्पोरेशन के पास, जबकि 49.1 प्रतिशत हिस्सेदारी भारत सरकार और शासकीय बैंकों सहित भारतीय निवेशकों के पास थी. भोपाल स्थित फैक्ट्री में बैटरी, कार्बन उत्पाद, वेल्डिंग उपकरण, प्लास्टिक, औद्योगिक रसायन, कीटनाशक और समुद्री उत्पाद बनाए जाते थे. साल 1984 में यह कंपनी देश की 21 सबसे बड़ी कंपनियों में शामिल थी.

कर्मचारियों को दी जानी चाहिए ट्रेनिंग

किसी भी कारखाने में सुरक्षा मानकों का पूरी तरह से पालन होना चाहिए. हर किसी कर्मचारी को सुरक्षा मानकों पर पूरा ध्यान भी देना चाहिए. किसी छोटे से छोटे हादसे को कभी नजर अंदाज नहीं करना चाहिए. औद्योगिक क्षेत्र में तो प्लांट, कंपनियों और ऑफिसों में एक बार पूरे स्टाफ को सुरक्षा, राहत और बचाव के तरीकों की ट्रेनिंग देकर अपडेट करना चाहिए. मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक गैस के कारखाने शहर से दूर बनाए जाने चाहिए.

भोपाल में 3 घंटों में फैली तबाही

कड़ाके की सर्द रात थी, लोग चैन की नींद सो रहे थे . 2 दिसंबर, 1984 को भोपाल की छोला रोड स्थित यूनियन कार्बाइड कारखाने में भी रोज की तरह अधिकारी, कर्मचारी और मजदूर प्लांट एरिया में अपना काम संभाले हुए थे .समझिए उस रात समय दर समय कारखाने के अंदर क्या-क्या हुआ था .

2 दिसंबर, 1984 रात 8 बजे ...

यूनियन कार्बाइड कारखाने की रात की शिफ्ट आ चुकी थी, जहां सुपरवाइजर और मजदूर अपना-अपना काम कर रहे थे

2 दिसंबर, 1984 रात 9 बजे ...

करीब आधा दर्जन कर्मचारी भूमिगत टैंक के पास पाइनलाइन की सफाई का काम करने के लिए निकल पड़ते हैं.

2 दिसंबर, 1984 रात 10 बजे ...

कारखाने के भूमिगत टैंक में रासायनिक प्रतिक्रिया शुरू हुई, टैंकर का तापमान 200 डिग्री तक पहुंचा और गैस बनने लगी.

2 दिसंबर, 1984 रात 10:30 बजे ....

टैंक से गैस पाइप में पहुंचने लगी. वाल्व ठीक से बंद नहीं होने के कारण टॉवर से गैस का रिसाव शुरू हो गया.

3 दिसंबर, 1984 रात 12:15 बजे...

वहां मौजूद कर्मचारियों को घबराहट होने लगी. वाल्व बंद करने की कोशिश की गई लेकिन तभी खतरे का सायरन बजने लगा.

3 दिसंबर, 1984 रात 12:50 बजे ...

वहां आसपास की बस्तियों में रहने वाले लोगों को घुटन, खांसी, आंखों में जलन, पेट फूलना और उल्टियां होने लगी.

3 दिसंबर, 1984 रात 1:00 बजे ...

पुलिस के सतर्क होने से पहले भगदड़ मचने लगी. लेकिन कारखाने के संचालक ने कहा- कोई रिसाव नहीं हुआ है.

3 दिसंबर, 1984 रात 2:00 बजे ...

कुछ देर बाद तो अस्पताल परिसर में ऐसे मरीजों की भीड़ उमड़ आई.

3 दिसंबर, 1984 रात 2:10 बजे ...

कारखाने से खतरे का सायरन बजने और तबियत बिगड़ने की वजह से लोग घरों से बाहर भाग रहे थे. पूरे शहर में गैस फैल चुकी थी.

3 दिसंबर, 1984 रात 4:00 बजे ...

नींद के आगोश में समाए हजारों लोग पल भर में जहरीली गैस के मरीज बन चुके थे. इस बीच गैस रिसाव पर काबू पा लिया गया.

3 दिसंबर, 1984 तड़के सुबह 6:00 बजे ...

पुलिस की गाड़ियां क्षेत्र में लाउडस्पीकर से चेतावनी देने लगीं. शहर की सड़कों पर हजारों गैस प्रभावित लोग या तो दम तोड़ते जा रहे थे या जान बचाने के लिए बदहवास होकर इधर-उधर भाग रहे थे.

त्रासदी का आखिरी कचरा हुआ स्वाहा

भोपाल गैस त्रासदी के पूरे 40 साल बाद अब उसके बचे हुए आखिरी 337 टन कचरे को वैज्ञानिक विधि से जलाकर खाक कर दिया गया है. दरअसल, त्रासदी के पुराने कचरे को जलाने को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था. लंबे समय तक कोर्ट में यह मामला रहा. इसी के बाद आखिरकर वो समय आया जब कचरे को भोपाल से धार जिले के पीथमपुर लाया गया. इसी के बाद कोर्ट के फैसले के बाद कचरा जलाने का काम शुरू हुआ. 29 और 30 जून की आधी रात को लगभग 1 बजे तक पूरा 337 टन कचरा जलकर खाक हो गया.हाईकोर्ट के निर्देश के बाद केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के तकनीकी विशेषज्ञों की देखरेख में इसे अधिकतम 270 किलोग्राम प्रति घंटे की दर से जलाया गया. द्विवेदी के अनुसार, कुल 337 टन कचरे को जलाने के बाद बची राख और बाकी के अवशेषों को बोरियों में सुरक्षित रूप से पैक करके प्लांट के लीक-प्रूफ स्टोरेज शेड में रखा जा रहा है.

34 बरस पहले 1984 में 2 दिसंबर की रात और 3 दिसंबर की सुबह भोपाल की वो काली रात जिसने हजारों लोगों को दबे पांव मौत के आगोश में सुला लिया. भोपाल स्थित यूनियन कार्बाइड के कारखाने से जहरीली गैस रिसाव से समूचे शहर में मौत का तांडव मच गया.

इस त्रासदी के बाद यूनियन कार्बाइड के मुख्य प्रबंध अधिकारी वॉरेन एंडरसन रातोंरात भारत छोड़कर अपने देश अमेरिका रवाना हो गए थे.

भोपाल गैस त्रासदी मामले में सात जून को अदालत ने आठ लोगों को दोषी करार देकर 2-2 साल की सजा सुनाई थी. इस मामले में यूनियन कार्बाइड के तत्कालीन प्रमुख वॉरेन एंडरसन फरार घोषित किए गए थे. हालांकि, वो भारत छोड़कर जाने में सफल हो गए थे. गैस हादसे के 4-5 दिन बाद यानी सात दिसंबर को एंडरसन भोपाल पहुंचे थे और उन्हें एयरपोर्ट पर ही गिरफ्तार कर लिया गया था. एंडरसन ने फैक्ट्री में पहले भी हुए हादसों को नजरअंदाज किया था.

त्रासदी के मुख्य आरोपी की हो चुकी है मौत

हालांकि यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड के तत्कालीन मुखिया और इस त्रासदी के मुख्य आरोपी वॉरेन एंडरसन की भी मौत 29 सितंबर 2014 को हो चुकी है

आईसीएमआर की रिपोर्ट में हुआ चौंकाने वाला खुलासा

भोपाल गैस त्रासदी को 41 साल हो गए, लेकिन इसका ज़हर अब भी पीड़ितों के शरीर में बैठा है. रिपोर्ट में कहा गया कि पीड़ितों में थायरॉइड की बीमारियां, मोटापा और मेटाबॉलिक डिसऑर्डर्स लगातार बढ़ते जा रहे हैं. रिपोर्ट में कहा गया कि गैस पीड़ितों में डायबिटीज पांच गुना और हाइपरटेंशन तीन गुना ज्यादा मिला. गैस ने फेफड़ों, आंखों, दिल, दिमाग और प्रजनन प्रणाली पर असर छोड़ा है. उक्त संस्था के विशेषज्ञ कहते हैं कि दूसरी और तीसरी पीढ़ी तक इसके प्रभाव दिख रहे हैं. यहां बता दें कि आईसीएमआर भोपाल हर साल गैस पीड़ितों के स्वास्थ्य को लेकर हर तरह का अनुसंधान कर रहा है. इसकी रिपोर्ट समय- समय पर जारी करता है, ताकि मध्यप्रदेश सरकार इन पीड़ितों के स्वास्थ्य की ओर ध्यान दे सकें.